International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 07-10-2020; Accepted: 22-10-2020; Published: 09-11-2020
Volume 2; Issue 4; 2020; Page No. 33-35

भैरव प्रसाद गुप्तः असधाण जीवन शैली

डॉ रंजना त्रिपाठी
श्री मुरली मनोहर टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया,उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

भैरव प्रसाद गुप्त का नाम स्वात ंत्र्योत्तर हिन्दी लेखकों में जिन्होने उद्देश्यपूर्ण तथा उसके प्रचार को अपने जीवन का उद्देश्य माना है, आज सबसे आगे लिया जाता है। वे 'सती मैया का चौरा' 'गंगा मैया' 'धरती' 'अन्तिम अध्याय' 'नौजवान' आदि कालजयी उपन्यासों के साथ अब तक सोलह उपन्यासों 'चाय का प्याला' 'हड़ताल' 'धनिया की साड़ी' 'म ंगली की टिकुली' 'लोहे की दीवार', 'एक खामोश मौत', 'श्रम' 'आप क्या कर रहे हैं', 'हाकिम कौन है', 'यही जिन्दगी है', 'चुपचाप',
'घुरहुआ', 'कदम के नीचे', 'टिड्डे', 'हनुमान', 'सोने का पिजड़ा', आदि दो सौ से ऊपर कहानियों, 'चन्दबरदायी' नाटक तथा कई दर्जन एकांकियों तथा सैद्धान्तिक लेखों के प्रणेता भैरव प्रसाद गुप्त का जन्म उत्तर प्रदेश के सुदूर पूर्वी छोर पर अवस्थित जनपद बलिया की सिकन्दरपुर तहसील के छोटे से गांव सिवान कला में 7 जुलाई सन् 1918 को हुआ था। भैरव प्रसाद गुप्त का जन्म एक उच्च मध्यम वर्गीय सम्पन्न परिवार में हुआ था गुप्त जी का परिवार न तो सम्पन्न था न विपन्न।

एक सामान्य खाते पीते परिवार में भैरव प्रसाद गुप्त की शैशव एवं किशोरावस्था एक खात ं पीते खुशहाल घर में व्यतीत हुई। स्वयम् भैरव प्रसाद जी कहते हैं ''मेरा परिवार तो बहुत सम्पन्न तो नहीं था लेकिन अपने टोले में शायद सबसे अधिक सम्पन्न था। इस माने में कि हमारे परिवार में किसी को खाने–पीने का कोई कष्ट नहीं था और टोले के लोगों से हम लोगों का जीवन–स्तर कुछ ऊपर था'', इसका अभास मुझे बहुत बाद में हुआ कि मेरे पिताजी और माताजी का सम्मान गांव के लोग और मुहल्ले के लोग बहुत अधिक करते थे। उस समय बचपन में कोई इस तरह की बात नहीं थी क्योंकि हम समझते थे कि सब बराबर है, सब बच्चे बराबर हैं, हम स्कूल में पढ़ने जाते थे वहां सब तरह के बच्चे थे और सबसे हमारा बराबर का सम्बन्ध रहता था। लेकिन अब मैं कह सकता हूँ कि कोई बात थी जिससे लगता था कि मेरा घर, मेरा परिवार गांव म ं ,मेरे खास मुहल्ले म ं एक सम्मानित परिवार था।2

भैरव प्रसाद गुप्त की प्रारम्भिक शिक्षा अपने गांव सिवान–कलॉ से प्रारम्भ हुई। गुप्त जी का जन्म गांव के हिसाब से एक सम्पन्न वैश्य (बनिया) परिवार में हुआ था। अतः जातीय व्यवसाय के अनुरूप बालक भैरव प्रसाद को परिवार वालों ने 'महाजनी' की शिक्षा दिलवायी। उस जमाने में वैश्य परिवार के बच्चों को प्राइमरी स्कूल में जाने से पहले महाजनी पढ़ाई जाती थी। महाजनी स्कूल गांव में चलते थे जिसमें गांव के बच्चे महाजनों, बनियों के लड़के खास तौर पर पढ ़त ं थे। महाजनी पूर्णतया गणित की शिक्षा प्रणाली थी। महाजनी की लिपि द ंवनागरी लिपि से पृथक थी जिसे मुड़िया कहा जाता था। स्वाभाविक रूप से मुड़िया लिपि वैश्य परिवारों के बुजुर्गों में प्रचलित थी। महाजनी इसी मुड़िया. लिपि म ं लिखी जाती थी। महाजनी स्कूल में गणित की प्रधानता थी। शिशु भैरव प्रसाद का प्रारम्भिक साक्षात्कार महाजनी लिपि तथा गणित से हुआ। बचपन में महाजनी स्कूल में प्रत्येक प्रकार के अंक कंठस्थ करा दिये जाते थे यथा एक से लेकर एक हजार तक की गिनती और सवैया, डेढ़ा और उसके बाद अढ़ैया, ढाई और साढ़े पांच आदि गिनतियां याद करनी पड़ती थीं। भैरव प्रसाद जी के शिक्षा क्रम में प्रथमतः साक्षात्कार महाजनी लिपि एवं गणित से हुआ आगे चलकर विवेकपूर्ण तर्क पूर्ण सामाजिक यथार्थ के विश्लेषण में सहायक हुई।3

भैरव प्रसाद जी ने अपनी जीवन–यात्रा में लिखा है कि बचपन में मेरी मुलाकात एक मुसलमान लड़के से हुई। उससे संवाद का अवसर मिला और उससे मेरी दोस्ती हो गई। हमारे और उसके परिवार में बहुत अन्तर था। वह हमारे गांव के जमींदार का लड़का था और हम बनिया के लड़के थे, लेकिन कुछ संयोग ऐसा हुआ कि खेल–खेल मे ं ही मेरी और उसकी दोस्ती हो गयी। वह उद ू पढ ़ता था और लिखता था जब वह उर्दू लिखता था तब मुझे बड़ा अच्छा लगता था। उसके हरफो की बनावट ऐसी होती थी कि मै ं आकर्षित हो गया। मन में उद ू पढ ़ने की आकांक्षा बढ़ने लगी। मैं एक दिन अपने माता–पिता की आज्ञा के बिना चुपके से इस्लामिया स्कूल पहुँच गया पढ़ने के लिए और तो और मुझे स्कूल इतना भा गया कि मैंने स्कूल में विधिवत नाम लिखवा लिया। इस घटना से पूरे गांव में भूचाल आ गया कि वैश्य परम्परा के कट्टर अनुयायी परिवार का लड़का इस्लामिया स्कूल में नाम लिखवा लिया है। उस दौर में आर्य समाजियों का आन्दोलन जोरों पर था परिणाम स्वरूप हिन्दू एवं मुसलमानों के मध्य दूरियां बढ़ गयीं थीं। मेरे चाचा कट्टर आर्य समाजी थे। उनके लिए यह अपमान की बात थी कि एक कट्टर आर्य समाजी परिवार का लड़का इस्लामिया स्कूल में पढ ़ता है।[4]

भैरव प्रसाद के बालमन पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। उनका बालमन आहत हुआ कि केवल हिन्दू होने के कारण मुझे आलिफ सीखने से परिवार वालो ंने वंचित कर दिया था। भाषा एवं लिपि पर किसी धर्म का एकाधिकार नहीं है और नहीं किसी दूसरे धर्म के अनुयायियों द्वारा सीखी, पढ ़ी और लिखी जाने वाली भाषा के दूसरे धर्म के अनुयायी द्वारा सीखने से किसी धर्म का अपमान और अपहानि होती है।

पिता द्वारा इस्लामिया स्कूल से बालक भैरव प्रसाद को जबरदस्ती हाथ पकड़ कर खींच लाना और मौलवी साहब का अनुरोधात्मक हस्तक्षेप, बाल सखा जो संयोग से मुस्लिम समुदाय से था, उससे बिछुड़ना भैरव प्रसाद के बाल मन को गहरे रूप से झकझोर गया।बाल मन इस कृत्रिम विभाजन, मानवता की झूठी दीवार पर अपने सामर्थ्यानुसार आत्ममंथन करता रहा। सम्भवतः वैज्ञानिक समाजवाद की ओर आकर्षण इसी बालमन के वैचारिक अन्तर्द्वन्द्व का परिणाम है। भैरव प्रसाद आजीवन तर्क रहित अन्ध विश्वास से लड़ते हैं क्योंकि यह विचार जीवन के सत्य से दूर ले जाता है। भैरव प्रसाद गुप्त के उपन्यासों में इसे यत्र–तत्र देखा जा सकता है। ''अक्षर के आगे मास्टर जी'' में इसी प्रकार के कृत्रिम अन्धविश्वास एवं लोकमानस में उसके स्थायी जड़भाव को तोड़ने

का समर्थ तथा प्रभावकारी सद्प्रयास भैरव प्रसाद गुप्त न` किया है। भैरव प्रसाद ने न तो हिन्द ू धर्म को न ही इस्लाम को वास्तविक धर्म माना। भैरव प्रसाद गुप्त का वास्तविक धर्म था–

''इन्सानियत या मानवता का धर्म'' या जो तर्कपूर्ण विवेक का परिचायक है।

अज्ञानवश अन्धकार में फँसना एक बात है और ज्ञान होते भी अन्धविश्वास का शिकार होना द ूसरी बात है। अन्धविश्वास के कारण मनुष्य का आत्मविश्वास क्षीण होता है।, शक्ति तथा क्रियाशीलता में शिथिलता आती है, यहां तक कि एकदम निकम्मा तथा असामाजिक भी हो जाता है, जैसे साधु, सन्त, फकीर, आवारे, चोर, डाकू, हत्यारे अन्य अपराधकर्मी आदि। सबसे गम्भीर बात यह है कि अन्धविश्वासों के कारण समाज के विकास में बड़ी रुकावटें आती हैं, आदमी की सामाजिक चेतना कुंठित हो जाती है, जिसके चलते आदमी समाज के विकास की नयी दिशा में अथवा नये मार्ग पर चलने से इन्कार कर देता है। हमारी जिन्दगी ऐसी क्यों है, हम क्यों अन्धविश्वासों, कुप्रथाओं से जकड़े हुए है ं, हम क्यो ं अपने अनुभवों से भी कुछ नहीं सीखते।5

भैरव प्रसाद का बचपन जिस परिवेशगत बिषमता से साक्षात्कार करता है तथा जिस सत्य की अनुभूति करता है, कालान्तर म` वह स्थूलता स ूक्ष्म विद्रोह बनकर रचना कर्म में परत दर परत समाहित होता गया। अन्याय और विषमता के प्रति यह विद्रोह जिस अनुपात में धर्म के प्रति है उसी अनुपात में समाज के प्रति भी है। अक्सर देखने में आता है कि रचनाकार अपने पारिवारिक परिवेश के प्रति बचाव की मुद्रा में रहता है परन्त ु भैरव प्रसाद गुप्त का जीवन इसका अपवाद है। भैरव प्रसाद के लिए अन्याय, अन्याय है चाहे वह व्यक्तिगत स्तर पर हो अथवा पारिवारिक स्तर पर या सामाजिक स्तर पर। भैरव प्रसाद जी प्रत्येक अन्याय और विषमता के विरुद्ध संघर्ष की निरन्तरता के प्रतीक हैं। इस्लामिया स्कूल के उपरान्त भैरव प्रसाद को गांव के प्राइमरी स्कूल मे दाखिला मिला। प्राइमरी स्कूल से पढ़ाई की शुरूआत हुई वह जीवन पर्यन्त अबाध गति से चलती रही। पढ़ना और लिखना जैसे भैरव प्रसाद की नियति बन गयी। जीवन शायद अपना सपना बचपन से ही बुनने लगता है। भैरव प्रसाद की स्मृतियां जीवन्त हैं। वह अपनी स्मृति बोध के आधार पर काल खण्ड का गहन विश्लेषण करते हैं। बाल जीवन की विषमता उन्हें विद्रोही और क्रान्तिकारी बनाती है। वहीं

समत्व भाव की परम्परा उन्हें अनन्त आशावादी बनाती है। अपनी साहित्य यात्रा में भैरव प्रसाद जी लिखते हैं ''गांव में बच्चों के अभिभावक प्राध्यापकों के पांव छूकर प्रणाम निवेदित करते थे चाहे अध्यापक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शुद्र ही क्यो ं न हो। मेरे मन में बैठ गया कि गुरू सबसे सम्मानित पद है। मेरे अन्तर मन में यह तथ्य गहरे रूप से बैठ गया कि मैं भी अध्यापक बनूँ।

''कक्षा चार तक की पढ़ाई गांव के प्राइमरी स्कूल में सम्पन्न हुई तद्उपरान्त बालक भैरव प्रसाद आगे की पढ़ाई के लिए अपने गांव सीवान कला से लगभग

तीन किलो मीटर दूर सिकन्दरपुर कस्बे में गय`। उस समय प्राइमरी पाठशाला म` कक्षा एक से चार तक की पढ़ाई होती थी। अवशेष पढ ाई अर्थात कक्षा पांच से आठ तक की पढ़ाई मिडिल स्कूल में होती थी। मिडिल स्कूल को उस समय वर्नाक्यूलर फाइलन मिडिल स्कूल कहते थे तथा बोलचाल की भाषा में उसे तहसीली स्कूल कहते थे। मिडिल स्कूल में एक नया परिवेश मिला। बालक भैरव प्रसाद अब किशोर भैरव प्रसाद बन गये थे। अब नयी आका क्षा और नये सपने थे। सपना अपना स्वरूप बदल रहा था। अब प्राइमरी स्कूल में अध्यापक बनने की इच्छा नहीं रही। मन में विचार मिडिल स्कूल म` अध्यापक बनन` की होने लगी। यह एक संरेख में बालक से किशोर बन रहे भैरव प्रसाद जी का बौद्धिक विकास था। भैरव प्रसाद ने उर्दू मिडिल उत्तीर्ण किया। इस तरह एक वर्ष का नुकसान भी हुआ। भविष्य अपना रंग दिखा रहा था। उद ूर् के प्रति प्रारम्भिक आकर्षण लिपि के कारण था अब भाषा के रूप में भैरव प्रसाद उर्दू के करीब पहुँचे। भैरव प्रसाद के लिए उर्दू वरदान साबित हुई। वह स्वयम् कहते हैं ''उद ूर् या हिन्दी अपने आप में अकेली शायद उतनी जिन्दा जबान नहीं है, जितनी मिलकर हैं। इसका सबूत हमें प्रेमचन्द से मिलता है। प्रेमचन्द की जबान जो कि जो कथा के लिए आदर्श जबान है। यदि प्रेमचन्द उद ूर् नही ं जानते होते तो वे उस जबान में नहीं लिख सकते थे। इसलिए मेरा उर्दू पढ़ना वरदान साबित हुआ।6

भैरव प्रसाद किशोर अवस्था जब वे कक्षा छः के विद्यार्थी थे आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती की जीवनी लिखकर पूरे प्रान्त में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सम्भवतः यह भावी लेखन की प्रथम किरण थी। हाईस्कूल म` पहुँचते–पहुँत` अन्दर के लेखक का जागरण हो गया। अब कविता और कहानी बड़ी पत्रिकाओं में सहजता से छपने लगी। युवा भैरव प्रसाद का साक्षात्कार उस युग की प्रचलित साहित्यिक पत्रिकाओं से होने लगा यथा, सरस्वती, विशाल–भारत, चांद आदि।

संसार में उनकी पहली कहानी छपी जब वह नवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। साहित्यिक

पत्रिकाओं तथा पुस्तकों के माध्यम से पन्त, निराला, जयशंकर प्रसाद तथा प्रेमचन्द को पढ़ना उनके आदत या अभ्यास में सम्मिलित हो गया। नरेन्द्र देव, सम्पूर्णानन्द, राजाराम शास्त्री जैसे समाजवादियों के लेख भैरव प्रसाद अत्यधिक अभिरुचि स` पढ ते थे, वे कहतें हैं हमारी साहित्यिक तथा राजनीतिक रुचियां काफी ऊँचे स्तर की थीं और हम विद्यार्थी कविताओं, कहानियों और लेखों पर खूब बातचीत किया करते थे। स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा वाद विवाद में भाग लेते थे। अध्यापकों से हमें विशेष सहायता नहीं मिलती थी।7

भैरव प्रसाद को नियति साहित्य की ओर शनैः शनैः अग्रसर कर रही थी। हाईस्कूल में लेखन का अ ंकुरण हुआ और जब आगे की पढ़ाई के लिए इविंग क्रिश्चयन कालेज इलाहाबाद में पहुँचे तो वहां शिवदान सिंह चौहान, जगदीशचन्द्र माथुर, गंगा प्रसाद पाण्डेय, राजवल्लभ ओझाा जैसे भविष्य के साहित्यकार सहपाठी बन`। ये सभी सहपाठी उन दिनों हिन्दी साहित्य परिषद में बड़ी गम्भीरता पूर्वक कार्य कर रहे थे। इसी परिवेश में हिन्दी साहित्य की आलोचनात्मक प्रवृत्ति का विकास हुआ। इन सहपाठी साहित्यकारों की यदि कोई रचना प्रकाशित होती थी तो उस पर व्यापक चर्चा होती थी। इविंग क्रिश्चियन कालेज की पढ़ाई के दिनों में प्रेमचन्द को प्रथमतः देखने तथा सुनने का अवसर मिला।

1941 में भैरव प्रसाद की बचपन की आकांक्षा अध्यापक बनने की पूरी हुई।

भैरव प्रसाद जी दक्षिण भारत मे ं हिन्दी अध्यापक बनकर मद्रास गये। पुनः मद्रास से त्रिचिन्नापल्ली गय`, वहां आकाशवाणी से ''लेसन्स इन हिन्दुस्तानी'' कार्यक्रम में दस मिनट का हिन्दी शिक्षा का प्रसारण करने लगे। साथ ही न`शनल कालेज तथा विम`न्स क्रिश्चियन कालेज म` हिन्दी पढ़ात` थे।

1942 में महात्मा गांधी का रचनात्मक कार्यक्रम राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार के लिए लगा हुआ था अतः हमें आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने की अनुमति नहीं मिली। भैरव प्रसाद गुप्त का परिवार कांग्रेस और आन्दोलन से गहरे रूप से जुड़ा था। 1942 का आन्दोलन बलिया में अत्यन्त उग्र था। जिला कलेक्टर ने 1942 के बलिया के नायक चित्तू पाण्डेय को अपना त्याग पत्र दे दिया था। एक माह के पश्चात व्यापक दमन चक्र का आरम्भ हुआ। इसमें भैरव प्रसाद गुप्त के परिवार पर भी सरकारी चक्र का दमन चला। मद्रास से गांव भैरव प्रसाद आये परन्तु स्थिति की विपरीतता के कारण पुनः कानपुर चले गये तथा नौकरी करने लगे। कानपुर मे ं रहते हुए कामरेड अर्जुन अरोड़ा के स्नेहिल संरक्षण में भैरव प्रसाद का एक और वौद्धिक जन्म हुआ तथा दूसरी ओर वैज्ञानिक समाजवाद के विवेकशील एवं तर्कपूर्ण अनुयायी के रूप में वैज्ञानिक समाजवाद जो भैरव प्रसाद के मन मस्तिष्क के अत्यधिक

करीब था। इस क्रम में यह कहना असंगत न होगा कि भैरव प्रसाद जी में वैज्ञानिक समाजवाद का अंकुरण पहले से अस्तित्वमान था। मात्र उसे पुष्पित एवं पल्लवित करने के लिए समय और एक साथी की आवश्यकता थी, और भैरव प्रसाद आजीवन प्रबल रूप से आस्थावान वैज्ञानिक समाजवादी बने रहे।

1944 में भैरव प्रसाद गुप्त ''माया'' पत्रिका के सम्पादकीय विभाग से जुड़ गये। आपने ''कहानी'' का सम्पादन किया जो हिन्दी कथा साहित्य में मील का पत्थर हैं। कहानी ने हिन्दी कथा साहित्य को एक नवीन गत्यात्मकता प्रदान की।

1941 में भैरव प्रसाद की बचपन की आकांक्षा अध्यापक बनने की पूरी हुई।

भैरव प्रसाद जी दक्षिण भारत में हिन्दी अध्यापक बनकर मद्रास गये। पुनः मद्रास से त्रिचिन्नापल्ली गये, वहां आकाशवाणी से ''लेसन्स इन हिन्दुस्तानी'' कार्यक्रम में दस मिनट का हिन्दी शिक्षा का प्रसारण करने लगे। साथ ही नेशनल कालेज तथा विमेन्स क्रिश्चियन कालेज में हिन्दी पढ़ाते थे।

1942 में महात्मा गांधी का रचनात्मक कार्यक्रम राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार के लिए लगा हुआ था अतः हमें आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने की अनुमति नहीं मिली। भैरव प्रसाद गुप्त का परिवार कांग्रेस और आन्दोलन से गहरे रूप से जुड़ा था। 1942 का आन्दोलन बलिया में अत्यन्त उग्र था। जिला कलेक्टर ने 1942 के बलिया के नायक चित्तू पाण्डेय को अपना त्याग पत्र दे दिया था। एक माह के पश्चात व्यापक दमन चक्र का आरम्भ हुआ। इसमें भैरव प्रसाद गुप्त के परिवार पर भी सरकारी चक्र का दमन चला। मद्रास से गांव भैरव प्रसाद आये परन्तु स्थिति की विपरीतता के कारण पुनः कानपुर चले गये तथा नौकरी करने लगे। कानपुर में रहते हुए कामरेड अर्जुन अरोड़ा के स्नेहिल संरक्षण में भैरव प्रसाद का एक और वौद्धिक जन्म हुआ तथा दूसरी ओर वैज्ञानिक समाजवाद के विवेकशील एवं तर्कपूर्ण अनुयायी के रूप में वैज्ञानिक समाजवाद जो भैरव प्रसाद के मन मस्तिष्क के अत्यधिक करीब था। इस क्रम में यह कहना असंगत न होगा कि भैरव प्रसाद जी में वैज्ञानिक समाजवाद का अंकुरण पहले से अस्तित्वमान था। मात्र उसे पुष्पित एवं पल्लवित करने के लिए समय और एक साथी की आवश्यकता थी, और भैरव प्रसाद आजीवन प्रबल रूप से आस्थावान वैज्ञानिक समाजवादी बने रहे।

1944 में भैरव प्रसाद गुप्त ''माया'' पत्रिका के सम्पादकीय विभाग से जुड़ गये। आपने ''कहानी'' का सम्पादन किया जो हिन्दी कथा साहित्य में मील का पत्थर हैं। कहानी ने हिन्दी कथा साहित्य को एक नवीन गत्यात्मकता प्रदान की।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भैरव प्रसाद गुप्त व्यक्ति और रचनाकार, सम्पादक– विद्याधर शुक्ल प्रकाशक श्रीमती प्रभा शुक्ल, 72 पूरा बल्दी कीडगंज इलाहाबाद, पृ० संख्या–13–14।
2. संघर्षशील जीवन का नाम, भैरव प्रसाद गुप्त डा० राजेन्द्र मोहन अग्रवाल भैरव प्रसाद गुप्त व्यक्ति और रचनाकार, सम्पादक–विद्याधर शुक्ल में संकलित पृ० संख्या–55
3. मेरी साहित्य यात्रा– भैरव प्रसाद गुप्त पृ० संख्या–15
4. उपन्यास ''अक्षर के आगे मास्टर जी''–भैरव प्रसाद गुप्त पृ० संख्या–80
5. मेरी साहित्य यात्रा– भैरव प्रसाद गुप्त पृ० संख्या–15
6. मेरी साहित्य यात्रा– भैरव प्रसाद गुप्त पृ० संख्या–16
7. मेरी साहित्य यात्रा– भैरव प्रसाद गुप्त पृ० संख्या–19